## श्रम विभाग

## ग्रादेश

## दिनांक 18 जून, 1987

सं भो वि (1) परिवहन भ्रायुक्त, हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) परिवहन भ्रायुक्त, हरियाणा चन्डीगढ़ (2) महा पित्रहक, हरियाणा राज्य परिवहन, सिरसा के श्रीमक श्री रामफल हैल्पर, पुत श्री राम स्वरूप गांव व डा० बुदाना, तहसील हांसी, जिला हिसार तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित भामले में कोई पौद्योगिक विवाद है,

ग्रौर चूं कि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रव, श्रोद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 9641-1-श्रम 78/ 32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिधिनियम, की धारा 7 के श्रवीन गठित श्रम न्यायालय रोहतक को विवादभस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे हैं लिखा मामला न्यायनिर्गय एवं पंचाट तीन मास में देते हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के वीच या तो विवादमस्त मामला है या प्रवन्त विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है।

क्या श्री रामफल की सेवा समाप्ति/छंटनी नियमानुसार की गई है ? यदि नहीं, तो, वह कित राहत का हकदार है ? सं० ग्रो० वि०/पानीपत/66-87/23665.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि चीफ इंग्जीक्यूटिव ग्राफिसर, मिल्क यूनियन, करनाल के श्रमिक श्री सूबे सिंह, पुत्र श्री पाले राम मार्फत श्री राधे ग्याम शर्मा, गा० व डा० बरसीला, जिला जीन्द तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीधोणिक विवाद है है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

कि सिंह प्रसिक्षिए, अब, भीकोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपसारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रवान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपान इसके द्वारा सरकारी श्रिधसूचना सं03(44)84-3 श्रम, दिनांक 18 श्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाना की विवादक्कत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिश्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा अधिक के बीच या तो विवादग्रस्त थामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है हैं:—

क्या श्री सूर्वे सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह है किस राहत की हकदार है ?

सं भो वि वि /यमुनानगर/154-86/23672. चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि इण्डियन शुगर एण्ड जनरल इन्जिनियरिंग. कारपोरेशन यमुनानगर के श्रीमक श्री सुमेर चन्द, पुत्र श्री रामस्त्ररूप, गांव खुर्दी डा० नगल, तह० जगाधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिल मामले में कोई ग्रीशीगिक विवाद है;

भीर चंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं 💃

इसलिये, ग्रब, ग्रीयोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं03(44)84-3 श्रम, दिनांक 18 ग्रिशैत, 1984 द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की घारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निदिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा सम्बन्धित मामला है:--

क्या श्री सुमेर चन्द, पुत्र श्री रामस्वरूप की सेवाओं का सवापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

म्रार० एस० मग्रवाल,

उप-सचिव, हरियाणा सरकार, श्रम विभाग ।